उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 827/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 27–09–2023

दिनांक : 27 सितम्बर, 2023
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की तेरहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की तेरहवीं बैठक डा. संजीव कुमार, उप महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 27 सितम्बर, 2023 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; कृषि विभाग; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक व कीट वैज्ञानिक; सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह (27 सितम्बर से 04 अक्टूबर, 2023) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (27 सितम्बर से 04 अक्टूबर, 2023) के प्रथम चरण (27 से 29 सितम्बर, 2023) के दौरान मुख्यतया उत्तर प्रदेश के पूर्वी एवं संलग्न मध्यवर्ती क्षेत्रों के कुछ भागों में मेघगर्जन एवं वज्रपात के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है, जबकि प्रदेश के मध्यवर्ती इलाकों में कहीं–कहीं छिटपुट बारिश होने की सम्भावना है। इसी क्रम में दिनांक 30 सितम्बर, 2023 के उपरांत प्रदेश में वर्षा के क्षेत्रीय वितरण एवं तीव्रता में आंशिक वृद्धि होने के कारण पूर्वी उत्तर प्रदेश में कई स्थानों पर हल्की वर्षा के साथ विंध्य क्षेत्र में कहीं–कहीं मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इसी क्रम में 30 सितम्बर से 01 अक्टूबर तक प्रदेश के मध्यवर्ती क्षेत्रों एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने के लिये परिस्थितियां अनुकूल है। इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास बने रहने तथा अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता 70 से 85 प्रतिशत एवं न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता 60 से 75 प्रतिशत के बीच रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 27 सितम्बर, 2023) के दौरान प्रादेशिक वर्षा

01 जून से 27 सितम्बर, 2023 तक प्रदेश में मानसून के दौरान औसत वर्षा 739.8 मिमी के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 619.3 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य वर्षा का 84 प्रतिशत है। प्रदेश के सभी 75 जनपदों में से 01 जनपद में अत्यधिक वर्षा जबकि 12 जनपदों में अधिक वर्षा, 21 जनपदों में सामान्य वर्षा, 35 जनपदों में न्यून वर्षा एवं 06 जनपदों (कौशाम्बी, मिर्जापुर, मऊ, चंदौली, कुशीनगर, भदोही) में अतिन्यून वर्षा प्राप्त हुई है। मानसून के दौरान 27 सितम्बर, 2023 तक सबसे अधिक वर्षा बिजनौर में 1270 मि.मी. हुई जो दीर्घकालिक औसत से 41 प्रतिशत अधिक है। सबसे कम वर्षा भदोही में 162 मि.मी. दर्ज हुई जो दीर्घकालिक औसत से 80 प्रतिशत कम है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मानसूनी वर्षा स्थगित (विड्राल) होने के कारण दलहनी, तिलहनी तथा आलू की फसलों की बुवाई के लिये परिस्थितियां अनुकूल हैं।
- मानसून वापसी आरंभ होने के कारण कृषि गतिविधियों की योजना बनाते समय दैनिक मौसम परिस्थितियों का विशेष ध्यान रखा जाय।
- जिन फसलों में पुष्प आने की अवस्था है उसमें किसी भी रसायन का छिड़काव न किया जाय।
- वातावरण में तापक्रम एवं नमी की अधिकता रहने से रोग एवं कीट का प्रकोप बढ़ने की स्थिति में कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश-प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें। कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु कीटनाशी रसायनों का प्रयोग अंतिम उपाय के रूप में करें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वारा पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु पशुपालक टोल फ्री हैल्पलाइन नं. 1962 पर सम्पर्क कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

धान की खेती

- धान में फूल खिलने व दुग्धावस्था में पर्याप्त नमी प्रत्येक दशा में बनाये रखें।
- देर से बोये गये धान में बाली बनते समय नत्रजन की चौथाई मात्रा यूरिया से टॉप ड्रेसिंग करें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।
- जिन कृषकों ने बीज के लिये धान की फसल ली है उन्हें सलाह दी जाती है कि वह खेत से अवांछित पौधों को हटा (रोगिंग) दें।
- देर से बोये गये धान में भूरा धब्बा एवं झोंका रोग की रोकथाम हेतु एडीफेनफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. 500 मिली. अथवा मैंकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. 2.0 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. 2.0 किग्रा. प्रति हे. 500-750 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गंधी कीट बाली की दुग्धावस्था में तथा सैनिक कीट बाली की परिपक्वता अवस्था में लगता है। गंधी कीट 2-4 कीट प्रति पुंज तथा सैनिक कीट की 4-5 सूड़ी प्रति वर्ग मी. दिखाई देने पर कार्बोफ्यूरान 0.3 प्रतिशत सी.जी. 25 कि.ग्रा. अथवा मैलाथियान 5 प्रतिशत धूल 20-25 किग्रा. प्रति हे. की दर से सुबह के समय बुरकाव करें। केवल गंधी कीट के नियंत्रण हेतु एजाडिरेक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.50 ली. मात्रा प्रति हे. 500-600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- दीमक व जड़ की सूड़ी के नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 2.5 ली. प्रति हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें। केवल जड़ की सूड़ी का प्रकोप होने पर इसके नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 0.3 प्रतिशत सी.जी.25 कि.ग्रा. 3-5 सेमी. स्थिर पानी में बुरकाव करें।
- धान की फसल में पत्ती लपेटक, तनाछेदक, हरा फुदका एवं हिस्पा कीट से बचाव के लिये कार्टाप हाईड्रोक्लोराइड (50 एस.पी.) की 150 से 200 ग्राम मात्रा 200 ली. प्रति एकड़ पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- देर से बोई गई उर्द/मूंग में फलीबेधकों से 5 प्रतिशत प्रकोपित फली पाये जाने पर बी.टी. 5 प्रतिशत डब्लू.पी. 1.5 कि.ग्रा. या इन्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 400 मि.ली. या क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.50 ली. या फेनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मि.ली. या साइपरमेथिन 10 ई.सी. 750 मि.ली. या डेकामेथिन 2.8 ई.सी. 450 मि.ली. का प्रति हे. की दर से 800-1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- उर्द /मूंग की पत्तियों पर सुनहरें चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गयी हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलोमोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 ई0सी0 01 लीटर या मिथाइल ओ-डिमेटान (25ई0सी0) 01 लीटर प्रति हे0 या इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से दो-तीन छिड़काव करें।
- देर से बोई गई अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी अथवा क्लोरपाइरीफॉस 0.5 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- तोरिया की बुवाई यदि अभी तक नहीं की है तो सम्पूर्ण प्रदेश हेतु संस्तुत भवानी प्रजाति की बुवाई 30 सितम्बर तक पूर्ण करें।
- राई/सरसों की बुंदेलखण्ड एवं आगरा मण्डल के सिंचित क्षेत्रों के लिये उपयुक्त प्रजातियों यथा नरेन्द्र अगेती राई–4, रोहिणी, माया, उर्वशी, बसंती (पीली), नरेन्द्र स्वर्णा राई–8, नरेन्द्र राई (एन.डी.आर.–8501) तथा असिंचित दशा में वरूणा (टी 59) एवं वैभव की बुआई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में करें।
- मूंगफली में जड सड़न एवं टिक्का रोग का प्रकोप होने पर खड़ी फसल पर मैंकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 225 ग्राम/हे. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तर पर करें।

गन्ना की खेती

- प्रदेश हेतु स्वीकृत गन्ना किस्मों की को.शा. 13235, को.लख. 14201, को. 15023, को. 0118, को.शा. 17231, को.शे. 13452 तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत किस्मों को.लख.–15466 व 16466 आदि की बुवाई करें।
- शरदकालीन गन्ना बुवाई हेतु तैयार की जा रही नर्सरी में समय–समय पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- शरदकालीन गन्ना बुवाई के लिये प्रदेश हेतु स्वीकृत गन्ना किस्मों का बीज सुरक्षित कर लें।
- शरदकालीन गन्ना बुवाई से पूर्व मृदा उपचार ट्राइकोडर्मा (10 कि.ग्रा. प्रति हे.) एवं बीज उपचार बावस्टिन 0.01 प्रतिशत अथवा थायोफिनेट मिथाइल 0.01 प्रतिशत से अवश्य करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित गन्ने क्लम्प/मूढ़ को उखाड़कर नष्ट कर दें।
- गन्ने में पायरीला, मिली बग व शल्क कीट के गंभीर प्रकोप की स्थिति में इमिलाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- बैंगन व मिर्च की तैयार बेहन की मेड़ों पर रोपाई करें।
- बेहन हेतु गोभीवर्गीय सब्जियों, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई उठी हुई क्यारियों (रेज्ड बेड) में करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- परवल की लता यथाशीघ्र लगायें।
- आलू की अगेती किस्मों जैसे कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी ख्याति, कुफरी सिंदूरी, कुफरी कंचन तथा कुफरी अशोका की बुआई करें।
- यदि शीत गृह में भण्डारण करने से पूर्व आलू उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से आलू निकालकर छॉटने के तुरन्त बाद आलू के कन्दों को बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सुखा लें। अंकुरित बीज आलू को उपचारित न करें।
- आलू की मुख्य फसल 15 अक्टूबर से लेने हेतु खेत की तैयारी तथा बीज की व्यवस्था करें। मुख्य फसल हेतु कुफरी बहार, कुफरी बादशाह, कुफरी आनन्द, कुफरी सतलज, कुफरी चिप्सोना–1, कुफरी चिप्सोना–3, कुफरी लालिमा, कुफरी सूर्या आदि किस्में उपयुक्त हैं।

बागवानी

- पूर्व में लगाये गये नवीन बागों में जो पौधें किन्ही कारणोंवश मर गये हों उनके स्थान पर नये पौधे यथाशीघ्र लगायें।
- आम के बाग के प्रथम दस वर्षों में अधिक लाभ के लिये अंतः फसल के रूप में आलू, मिर्च, टमाटर, लोबिया तथा ग्लेडियोलस की खेती की जा सकती है।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें तथा केले की तलवार पुत्ती को छोड़ते हुये शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा 50 से 60 ग्राम यूरिया प्रति पौधा देकर मिट्टी में मिलायें।
- बागों में यथा आवश्यक निराई–गुड़ाई करें।

पशुपालन

- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशुचिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- जहां खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का प्रकोप है वहां टीकाकरण सभी पशुचिकित्सालयों में कराया जा रहा है। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निशुल्क उपलब्ध है। बड़े पशुओं में गलाघोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी क्यू वैक्सीन से टीकाकरण करायें।
- सुबबूल वृक्षों की पत्तियों को चारे के रूप में प्रयोग करने हेतु उनकी पत्तियां तोड़कर संरक्षित कर लें अन्यथा कुछ समय पश्चात यह झड़कर समाप्त हो जायेगी।
- बरसीम व जई के पिछले वर्ष के खेतों में जहां खरपतवार अत्यधिक रहे हो उन खेतों की अदला–बदली कर लें।
- अतिरिक्त हरे चारे को साइलेज बनाकर संरक्षित करें।
- वर्तमान मौसम में मक्खी, मच्छर का प्रकोप बढ़ जाता है जिससे बचाव हेतु आवश्यक दवाओं/कृमिनाशक का नियमित छिड़काव आवश्यक रूप से कराया जाय।

मत्स्य पालन

- वर्तमान समय वर्षा ऋतु के समाप्ति का है अतः मत्स्य पालकों को तालाब के बंधो एवं तालाब के अंदर उत्पन्न जलीय वनस्पतियों के सफाई का कार्य करना आवश्यक है।
- तालाब में संचित मत्स्य बीज के पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों (यूरिया 25 कि.ग्रा. एवं सुपरफास्फेट 45 कि.ग्रा. तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 4 कि.ग्रा.) को प्रथम किस्त के रूप में कुल 74 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से तालाब में प्रयोग किया जाय।
- मत्स्य पालकों को मत्स्य बीज की वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग तालाब में मछलियों के भार का 1 से 2 प्रतिशत प्रतिदिन के अनुसार करना आवश्यक है।
- रासायनिक उर्वरकों एवं पूरक आहार के प्रयोग से जब तालाब के पानी का रंग हरा हो जाय तो आहार की मात्रा कम कर देनी चाहिये।

रेशम

- मानसून फसल द्वितीय (व्यवसायिक) के कीटपालन अवधि में साफ–सफाई का विशेष ध्यान दें।
- एरी मानसून व्यवसायिक फसल का कीटपालन प्रारंभ हो चुका है अतः इस कीटपालन कक्ष/भवन का विशुद्धीकरण तीन चरणों में पूर्ण कर लिया जाय।
- कीटपालन में कीटों को भींगी हुई पत्तियां न खिलायें।
- रेशम कीट पालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी रेशम अधिकारी/प्रभारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।

वानिकी

- वृक्षारोपण उपरांत जो पौधे मर गये हो उनके स्थान पर गैप फिलिंग का कार्य यथाशीघ्र पूर्ण करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 12 अक्टूबर, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

27/9/23

(संजीव कुमार)
उप महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।

3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
16. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
17. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
18. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
19. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
20. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
21. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
22. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
23. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
24. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
25. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
27. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
28. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
29. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
30. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
31. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
32. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
33. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
34. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
35. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
36. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
39. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
40. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
41. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
42. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
43. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
44. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

27-09-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की तेरहवीं बैठक दिनांक 27 सितम्बर, 2023 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)
4. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, क्राप प्रोडक्शन डिवीजन, आईजीएफआरआई, झांसी। (ऑनलाइन)
5. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,अयोध्या।
6. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
7. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस)। (ऑनलाइन)
8. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
9. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
10. डा. एस. सी. शुक्ला, संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
11. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
12. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
13. श्री ए.के.शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
14. श्री अनिल सागर, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ।
15. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
16. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
17. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
18. श्रीमती प्रज्ञा उपाध्याय, उद्यान अधिकारी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।